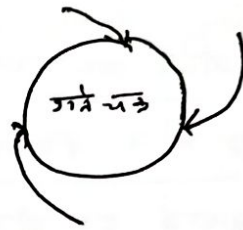


चक्रवात के उत्पत्ति के लिए वायु परिसंचन
 किन्ही निम्न भाग में-इ के चारों ओर फंदल निम्न के कतुदप
 होने से अतिगर्जना है, इससे गोलार्ध में यह परिसंचरण पृथ्वी
 से दूर से इसी दिशा में और दक्षिणी गोलार्ध में पृथ्वी
 से दूर से दिशा में होती है,

इससे
 वायु
 दौरे
 गिनी नीचे



उत्तरी गोलार्ध



दक्षिणी गोलार्ध

चक्रवात की केंद्र (आंश)
 के चारों ओर चलने वाली वायु
 से होती है।
 8-10° अक्षांशों के बीच
 उपवास-हालतों, आसानीय स्थिति

इसके उत्पत्ति का केंद्र चक्रवात की केंद्र
 के चारों ओर चलने वाली वायु से होती है, इसमें
 सामान्यतः 8-20° अक्षांश के बीच होती है,
 इसकी उत्पत्ति 20° N के उत्तर होती है।

शीतल चक्रवात में दो विपरीत दिशाओं
 से दो विपरीत दिशाओं वाली वायुएँ आकर एक
 दूसरे से मिलती है, उष्ण चक्रवात में भी ऐसा ही होता है,
 लेकिन वायु प्रवाह अधिक होते हैं कारण दोनों ही वायु
 रेखा से गर्म होकर प्रारंभिक रूपों में जाकर बिना किसी
 संश्लेष के उफर उठती है, शीतल वायु में किन्हीं गर्म वायु
 उफर उठती है, और इसी वायु नीचे रहता है। लेकिन
 उष्ण चक्रवात में दोनों ही वायु गर्म हो जाते हैं, अतः
 आर्द्रता के पाक जुड़ने से घूँसने से घूँसने ही उफर उठ जाते हैं।
 और आर्द्रता के बाहरी लेत में बर्षा कटती है, इस
 चक्रवातीय बर्षा का कारण आर्द्रता होता है।

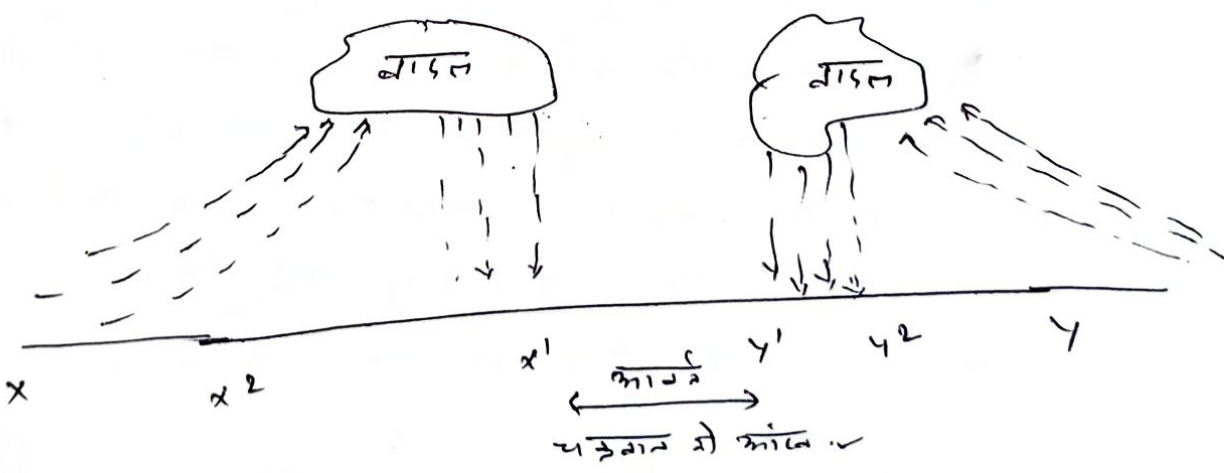
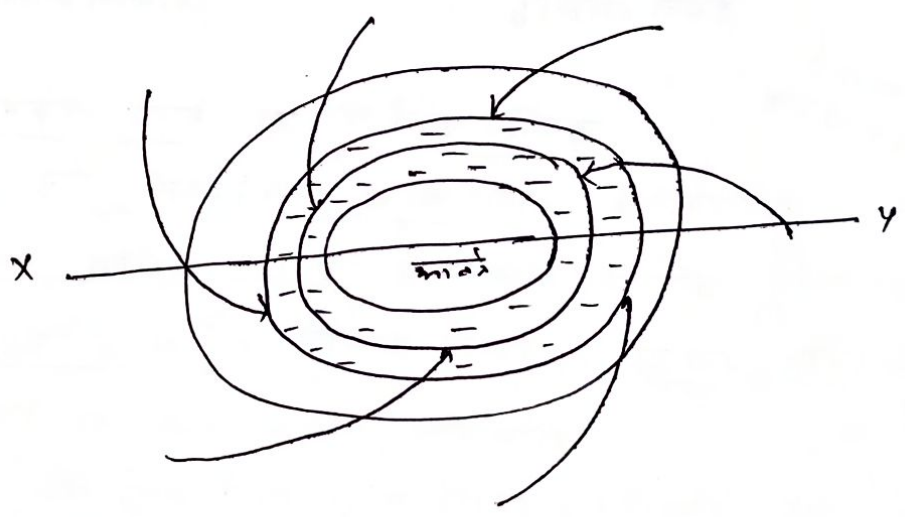
उष्ण चक्रवात में
 दोनों ही ओर से
 आने वाली वायुएँ
 उठने होती है।
 आर्द्रता के पाक
 जुड़ने से घूँसने से
 घूँसने ही उफर उठ
 जाते हैं।
 और आर्द्रता के
 बाहरी लेत में
 बर्षा कटती है,
 इस चक्रवातीय
 बर्षा का कारण
 आर्द्रता होता है।

उष्ण चक्रवात में सामान्यतः दीर्घाव

नदी बनना ज्योति दोनों तरह से आनेवाली गांधी में तापान्तर कम रहता है, और यदि बनना भी है तो क्षीणान्तरिक रहता रहित है, दोनों तरह के गांधी गांधी हीन मादल चक्रवातीय प्रवाह लेते हुए गीतों मिश्रित हां जाते हैं, सर्वाधिक तापमान वाले क्षेत्र पर

उपरोक्त कथयति राजीव विष्णु वजीप देखा है और नदी गति स्थलको भी समुद्र के कनिपनिमना के बीच तापीय प्रवाहों में शामिल हो जाता है, और फलित तापीय प्रवाहों के निष्पत्तियों को देखा है।

नियन्त्रण केन्द्र बनना है और नियन्त्रण केन्द्र के कारणों और चलनेवाली गांधी उदय चक्रवात उदयन रहते हैं, इसकी कथयति राजीव विष्णु वजीप देखा है और नदी गति स्थलको भी समुद्र के कनिपनिमना के तापीय प्रवाहों के निष्पत्तियों को देखा है। और अतिरिक्त तापीय प्रवाहों का संचय निष्पत्तियों का संचय बन जाता है।



$x_1 - y_1 \rightarrow$ आंध्र / चक्रवात से आंध्र
 $x - y \rightarrow$ चक्रवात से आंध्र

$$\left. \begin{matrix} x^2 - x' \\ y^2 - y' \end{matrix} \right\} \text{ चक्रवातीय वायु प्रवाह क्षेत्र एवं वर्षा का क्षेत्र.}$$

$$\left. \begin{matrix} x - x^2 \\ y - y^2 \end{matrix} \right\} \text{ गर्म वायु की ऊपर उठने की प्रवृत्ति.}$$

1) चक्रवात के केंद्रीय चरण में बहुत ही तेज हवा का केंद्रीय दबाव के कारण पुनः गर्म क्षेत्र ऊपर उठने की प्रवृत्ति विकसित करता है प्रतियोगिता विपन्न क्षेत्र में तापीय विस्तार की स्थिति उत्पन्न करता है।

विस्तार

उष्ण चक्रवात के छोटे व्यास (50-100 km) कोर क्षेत्रों में होने के दो प्रमुख कारण हैं -

1) खाली कोर समुद्री भाग का विस्तार इस प्रकार है कि अलग-2 वायुमण्डलीय वा निम्नोच्च प्रकृति अक्षांशीय प्रदेश में करते हैं, जैसे बंगाल की खाड़ी अरब सागर, फारस की खाड़ी, मार्स के उष्ण मैदान जैसी गर्म वायु राशि है, केंद्रीय समतापीय समतापीय के कारण में दीर्घांतर के बल की विपन्नता के विकसित होते हैं।

2) दूसरा कारण यह है कि उष्ण चक्रवात क्षेत्र में तापीय प्रभाव केंद्रीय क्षेत्र के कारण विपन्नता के स्वयं अलग-2 क्षेत्रों में विकसित होते लगता है, इन कारणों के परिणामस्वरूप उष्ण चक्रवात का मुख्य भाग कोर प्रभाव क्षेत्र इस प्रकार है - होर्न टापफन, होर्न